srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

खरीफ फसलों के प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनके रोकथाम और नियंत्रण के उपाय

srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मूँगफली फसल के प्रमुख कीट

तम्बाकू की इल्ली (Tobacco caterpillar)

रोंयेदार इल्ली (Hairy caterpillar)

पत्ती/पर्ण सुरंगक (Leaf minor)

सफेद गिडार (White grub)

दीमक (Termite)

भूरा घुन (Grey weevil)

माहूँ (Aphids)

हरा तेला/फुदका (Jassids)

मोयला (Thrips)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

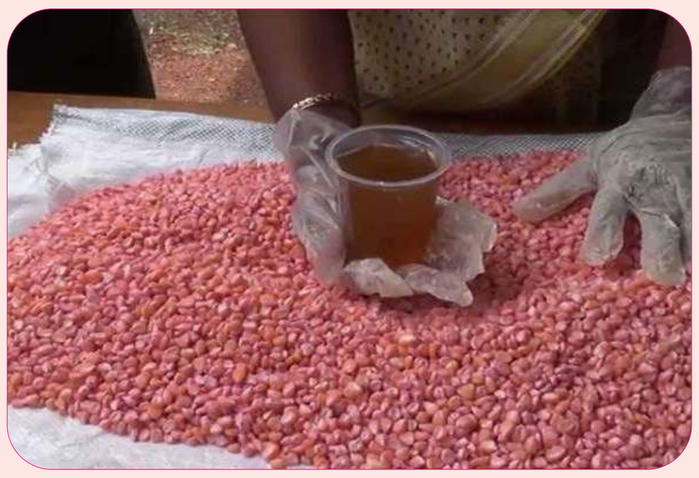

बीजामृत एवं नीमास्त्र से बीज उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

अवश्यक्ता अनुसार सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचाना

एक एकड़ के खेत में चार पीले चिपचिपे प्रपंच लगाना

प्रकाश प्रपंच का उपयोग

दीमक के नियंत्रण के लिए मटकी विधि का प्रयोग

एक एकड़ फसल में 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

जहॉ दीमक का अधिक प्रकोप हो तो गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत में 1 किलोग्राम बिवेरिया बेसियाना चूर्ण को मिलाए

तंबाकू की इल्ली एवं सफेद गिडार के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मूँगफली फसल के प्रमुख रोग

पौधा सड़न रोग
(Collar rot/ seedling blight Disease)

तना सड़न रोग (Stem rot Disease)

अगेती पर्ण धब्बा/अगेती टिक्का रोग
(Early leaf spot Disease)

पछेती पर्ण धब्बा/ पछेती टिक्का रोग
(Late leaf spot Disease)

गेरूआ रोग (Rust Disease)

काला धब्बा रोग (Anthracnose)

विषाणु गुच्छा रोग (Clump Virus Disease)

कली परिगलन विषाणु रोग
(Bud Necrosis Virus Disease)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

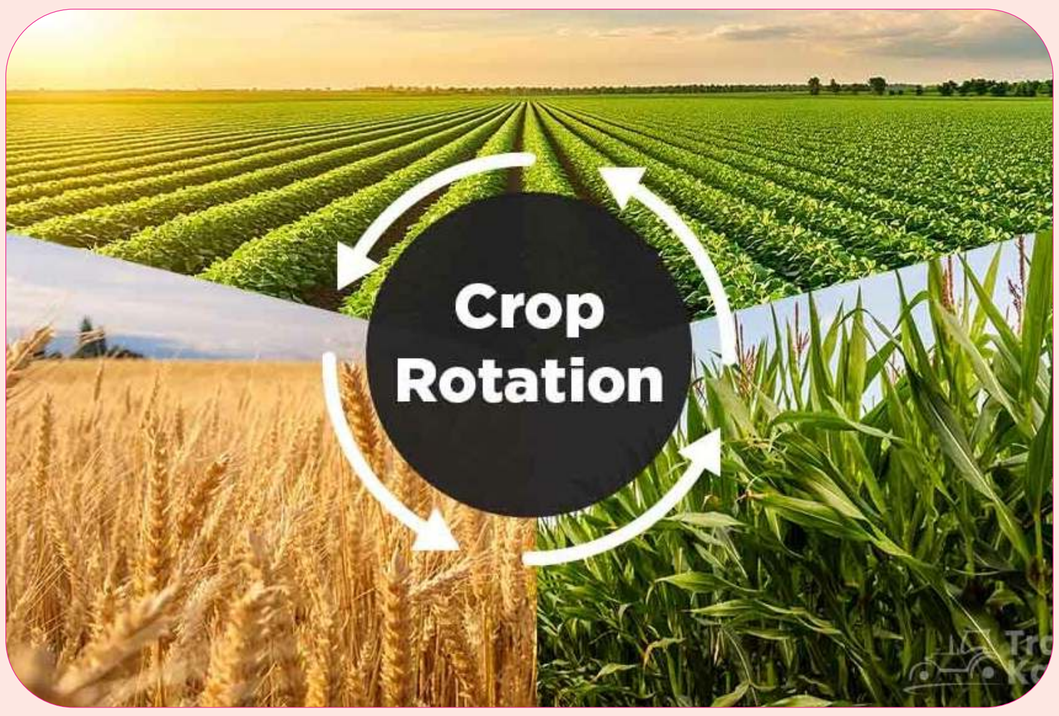

फसल चक्र (Crop Rotation):
एक ही फसल को बार-बार न बोएँ।
इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

स्वस्थ बीज का उपयोग (Use of Healthy Seeds):
स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीजों का उपयोग करें

बीजोपचार (Seed Treatment):
बुवाई से पूर्व बीजामृत तथा नीमास्त्र के घोल के साथ ट्रायकोडर्मा पावडर (5-10 ग्राम पावडर प्रति कि.ग्रा. बीज) से भी उपचारित करें

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): **घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें**

फसल उपचार (Crop Treatment): **फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्ट कर दें तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्रा. पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल बना कर छिड़के**

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मक्का फसल के प्रमुख कीट

सफेद गिडार (White grub)

गुलाबी तना छेदक (Pink Stem Borer)

तना छेदक प्रोढ़ (Pink Stem Borer)

तना छेदक इल्ली (Stem Borer Catterpillar)

प्ररोह मक्खी (Shoot Fly)

रोंयेदार इल्ली (Hairy caterpillar)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

बीजामृत एवं नीमास्त्र से बीज उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

अवश्यकतानुसार सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचाना

एक एकड़ के खेत में चार पीले चिपचिपे प्रपंच लगाना

प्रकाश प्रपंच का उपयोग

दीमक के नियंत्रण के लिए मटकी विधि का प्रयोग

एक एकड़ फसल में 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

जहॉ दीमक का अधिक प्रकोप हो तो गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत में 1 किलोग्राम बिवेरिया बेसियाना चूर्ण को मिलाए

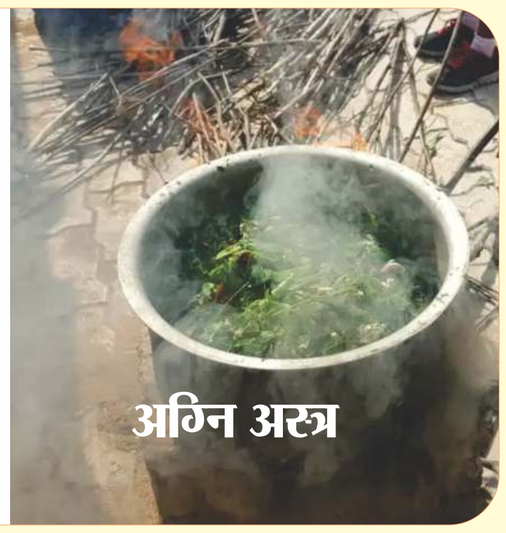

सफेद गिडार एवं गुलाबी तनाछेदक के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मक्का फसल के प्रमुख रोग

सामान्य रतुआ रोग
(Common Rust Disease)

मृदुरोमिल आसिता रोग
(Downey Mildew Disease)

आवरण झुलसा रोग
(Sheath Blight Disease)

सामान्य रतुआ रोग
(Common Rust Disease)

डंठल सड़न रोग
(Stalk Rot Disease)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

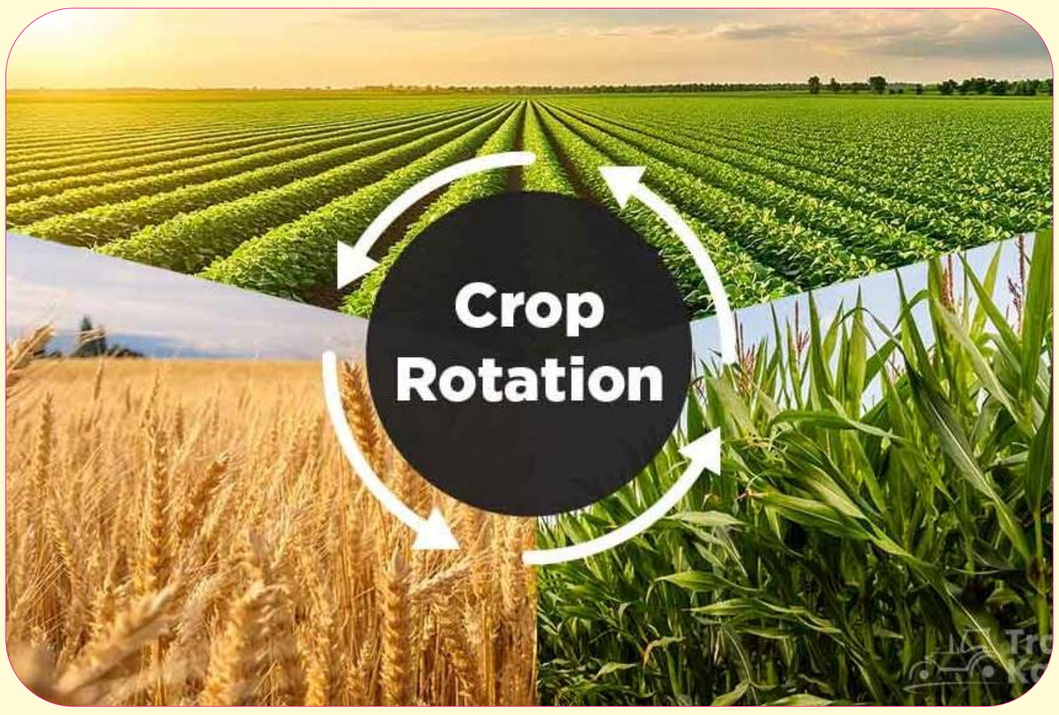

फसल चक्र (Crop Rotation):
एक ही फसल को बार-बार न बोएँ।
इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

स्वस्थ बीज का उपयोग (Use of Healthy Seeds):
स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीजों का उपयोग करें

बीजोपचार (Seed Treatment):
बुवाई से पूर्व बीजामृत तथा नीमास्त्र के घोल के साथ ट्रायकोडर्मा पावडर (5-10 ग्राम पावडर प्रति कि.ग्रा. बीज) से भी उपचारित करें

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): **घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें**

फसल उपचार (Crop Treatment): **फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्ट कर दें तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्रा. पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल बना कर छिड़के**

srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मूंग फसल के प्रमुख कीट

मोयला (Thrips)

माहूँ (Aphids)

सफेदमक्खी (Thrips)

फली छेदक (Pod borer)

रोंयेदार इल्ली (Hairy caterpillar)

तेला (Blister Beetle)

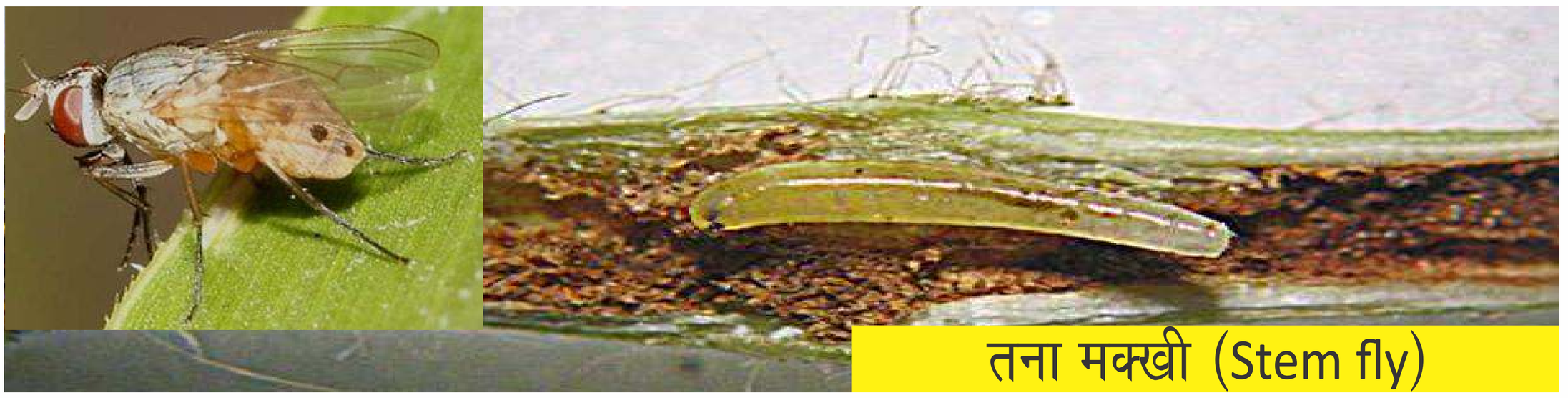

तना मक्खी (Stem fly)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

बीजामृत एवं नीमास्त्र से बीज उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

अवश्यकतानुसार सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचाना

एक एकड़ के खेत में एक प्रकाश प्रपंच लगाना

फेरोमेन ट्रेप का उपयोग

दीमक के नियंत्रण के लिए मटकी विधि का प्रयोग

एक एकड़ फसल में 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

जहॉ दीमक का अधिक प्रकोप हो तो गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत में 1 किलोग्राम बिवेरिया बेसियाना चूर्ण को मिलाए

रोंएदार इल्ली एवं फली छेदक कीट के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

मूंग फसल के प्रमुख रोग

जड़ एवं तना सड़न रोग (Root & stem rot disease)

काला धब्बा रोग
(Anthracnose Disease)

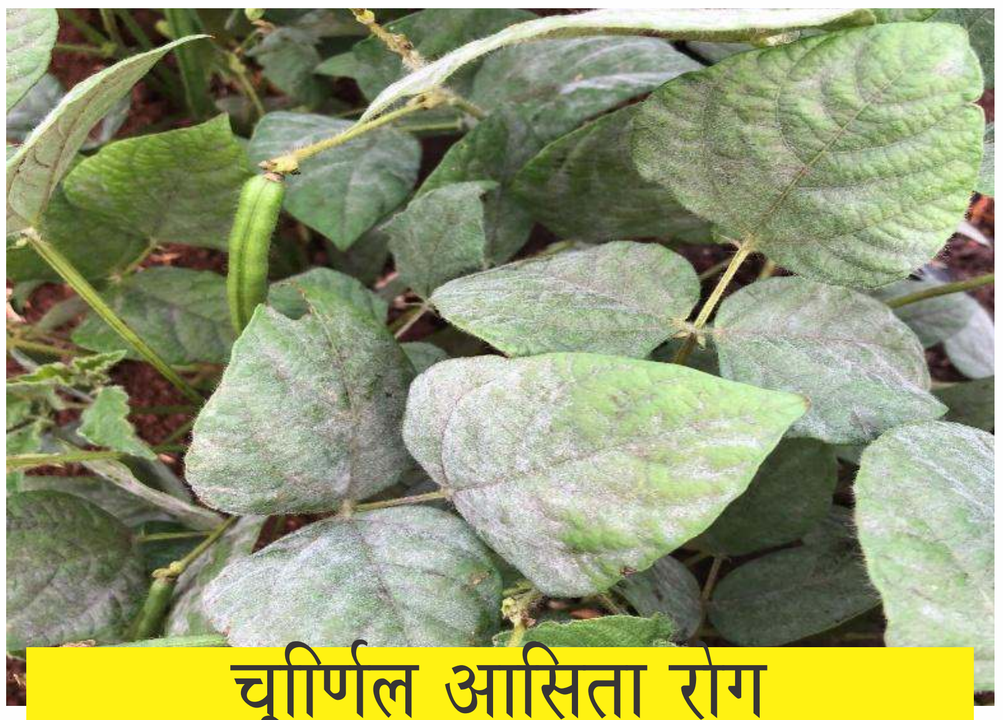

चूर्णिल आसिता रोग
(Powdery mildew Disease)

पीला विषाणु रोग
(Yellow Mosaic Virus Disease)

पत्ती धब्बा रोग
(Leaf Spot Disease)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

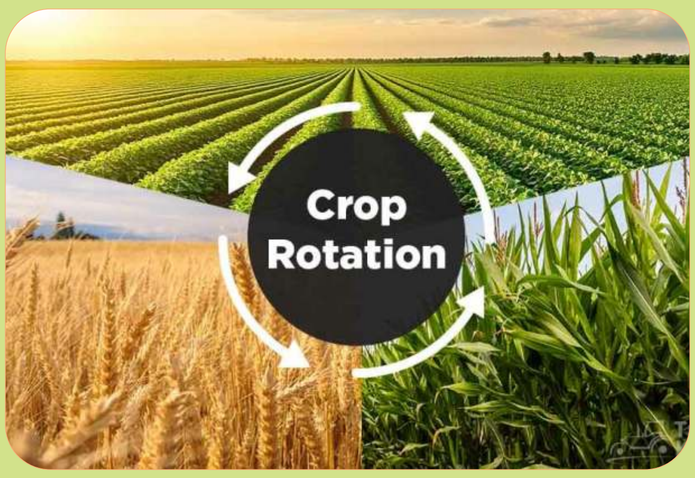

फसल चक्र (Crop Rotation):
एक ही फसल को बार-बार न बोएँ। इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

उन्नतशील किस्मों का चयन (Selection of Improved Varieties):
बुवाई के लिए उन्नतशील रोगरोधी / सहनशील किस्मों का चयन करना चाहिए।

समय पर बुवाई:
मूंग फसल की समय पर बुवाई का बहुत महत्व है।

बीजोपचार (Seed Treatment):
बीजामृत एवं नीमास्त्र से बीज उपचार

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें

नमी प्रबंधन (Moisture Management):
उचित जल निकास और आवश्यकतानुसार सिंचाई करना

फसल उपचार (Crop Treatment): फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्टकर दे तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्रा. पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें ।